

21/19

पत्राक्षी पेयउदी गौमाथलानु को बारि-बार
आवाज लगाते के बावजूद न्यामालन
होती नहीं जाने पर प्रकृत करण होनी
अन पंक्ति के आदि किम पता ही प्रकाश केवल शुभ
होने नरुण मे नरु व पाठिल फल ही
होने